Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 2, April-2023, ISSN 2230-7540

जेजे स्कूल ऑफ आर्ट की दिवार एवं खिडकीयों पर बनी भित्तिचित्रों की पार्श्वभूमी : संक्षेप मे अध्ययन

विजय गोपाल सकपाल[1]*, डॉ मनोज टेलर[2]

शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, (राज.)

असोसिएट प्रोफेसर, व्हीजुव्ल आर्ट विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, (राज.)

सार - *इस शोध पत्र में हमने जेजे स्कूल ऑफ आर्ट की दिवारों और खिड़कियों पर बने भित्तिचित्रों की पार्श्वभूमि पर विस्तृत अध्ययन किया है। हमने यहां प्रमुखतः इन भित्तिचित्रों की संरचना, उनके रचनात्मक मूल्य, और उनका सांस्कृतिक और कलात्मक महत्व विचार किए हैं। हमने इन भित्तिचित्रों की प्रमुख पार्श्वभूमि की अध्ययन किया है और उनमें प्रदर्शित जीवनशैली, सामाजिक संकेत और समाजशास्त्रीय पहलुओं को विश्लेषित किया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों, कलाकारों, इतिहासकारों, और सांस्कृतिक अभिज्ञानियों को इन भित्तिचित्रों के महत्वपूर्ण पहलुओं की समझ बढ़ाने का प्रदान करें। हमारे अध्ययन से प्रकट हुआ है कि जेजे स्कूल ऑफ आर्ट की दिवारों और खिड़कियों पर बने भित्तिचित्रों की पार्श्वभूमि विविधता, साहित्यिकता, और कला की एक मधुर संगम है। ये भित्तिचित्र सामाजिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक मानचित्र के रूप में कार्य करते हैं और छात्रों को एक सामरिक और सृजनात्मक वातावरण प्रदान करते हैं। इन भित्तिचित्रों के माध्यम से, सामुदायिक और सांस्कृतिक वारसा को समारोहित किया जाता है और कला को व्यापक सामाजिक परिवेश में प्रशंसा की जाती है। संक्षेप में, इस शोध पत्र में हमने जेजे स्कूल ऑफ आर्ट की दिवारों और खिड़कियों पर बने भित्तिचित्रों की पार्श्वभूमि पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पेश किया है। इसमें हमने इन भित्तिचित्रों की संरचना, मूल्य, और महत्व को प्रकट किया है और उनका सांस्कृतिक और कलात्मक परिणामों पर विचार किया है। इस शोध पत्र का परिणाम छात्रों, कलाकारों, इतिहासकारों, और सांस्कृतिक अभिज्ञानियों के लिए इन भित्तिचित्रों के महत्वपूर्ण पहलुओं की समझ में मदद करेगा।*

मुख्य शब्द *- जेजे स्कूल ऑफ आर्ट, दिवार, खिड़कियाँ, भित्तिचित्र, पार्श्वभूमि, संक्षेप, संरचना, मूल्य, महत्व, सांस्कृतिक, कलात्मक*

----------X----------

कहा जाता है की इमारतोंने सांस्कृतिक मूल्यों का सर्वधन किया है। वास्तविक यह सच ही है की, मानव की उत्क्रांती, विकास जैसजैस. हुआ है। वैसेवैसे उसकी सभ्यता एवं संस्कृती विकसित हुई है। माना जाता है की, इमारत की संरचना तीन तथ्यो पर खड़ी होती है । उसका पहिला तथ्य जव वायू, दुसरा तथ्य तकनीकी पक्ष और तीसरा है, संस्कृती इन तीनो मे से अगर कोई मजबूत पाया है, तो वह है संस्कृती, कोई सार्वजनीक इमारत अपनी सार्थकता बनाये रखती है, तो उसके पिछे सांस्कृतीक मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमीका रही है। अर्थात वास्तू इमारते केवल संरक्षीतता का स्थान नही है। विपतू वह सांकृती एवम मनुष्य की अभिरूची संपन्नता का प्रतिक है।

मानवने अपनी जिवन यात्रा आदिम गुहाओं में शुरू की है। और वह आज मल्टी स्टोरेज बिल्डींग बना रहा है । स्वाभावीक है की उसने अपनी व्यक्तीगत विकास के साथ सांस्कृतिक मुल्यो को भी विकसीत कीया है । उसके सामाजीक जिवन मे आवश्यकता के अनुसार कई मोड आए। हर मोड पर उसने अपनी कल्पना शक्ती का अविष्कार दिखाया है। यह अविष्कार केवल अपनी जरूरत और पूरी करने के लीये ही नही बल्की जरूरत सुंदरता से संपन्न होनि चाहिए इसी भावसे सौदर्य तथा संस्कृती का पोषण हुआ है ।

www.ignited.in

निजी निवास हो या कोई सार्वजनीक वास्तू हो उसका निर्माण कार्य सुंदर होना चाहिए। जरूरत के उपरांत सुविधा और सौन्दय वह परिपूर्ण चाहिए यह भावना महत्व पूर्ण है।

जे जे स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना 1857 मे हुई पश्चात उस इमारत का निर्माण हुआ। जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट का पहला नाम बॉम्बे स्कूल था। सर जमशेटजी जीजीभॉय ने इस इमारत के लीये रु एक लाख का अनुदान दिया था। जेजे. स्कूल ऑफ आर्ट जमशेटजी जीजीभॉय के साथ महान विभूति जगन्नाथ शंकरशेट का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

जेजे स्कूल ऑफ आर्ट को स्थापना करागीरों के बच्चों को शास्त्रीय तकनीक सीखानी चाहिए इस उद्देश से हुई है। समय के साथसाथ यह धारणा, बदल गई और बॉम्बे स्कूल कला पठाई जाने वाली संस्था, ऐसे उसकी पहचान बनी। इस वास्तू से अनेक कलाकार कारागीर पढे, बडे हुये। देश को ही नहीं, बल्कि की पुरी दुनिया को उन्होने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इन प्रतिभाशाली कलाकारों का बचपन जहा गुजरा हो वह वास्तु भी बड़ी सौभाग्यशाली है। कलाकार अपनी शिक्षा पूरी होने बाद वहासे निकल जाते है। किन्तु वह अपनी यादे और कुछ निशान छोड़ जाते है। इस स्मरण के साथ वास्तू की गरीमा और बढ़ जाती है। एसे ही कुछ जेजे स्कूल आर्ट की इमारत वास्तु के साथ भी हुआ है।

जेजे स्कूल मे पढने वाले छात्र तथा पढाने वाले अध्यापकोंने जेजे की वास्तू पर अपने पद चिन्ह अंकित किये है। इन में भी जगन्नाथ अहिवासी की भुमीका अहम रही है। अहिवसी का जन्म 6 जूलै 1901 में उत्तरप्रदेश के मथुरा के पास बलदेव इस कसब छोटेसे में हुआ है। अहिवसी ने कला की प्रारंभीक शीक्षा गरिगाव के केतकर आर्ट स्कूल मे ली। 1924 में जेजे. स्कूल ऑफ़ आर्ट मे उन्होने आगो की शीक्षा प्रारंभ की। उस समय पर सालोम स्कूलके प्राचार्य तथा प्रमुख थे। उन्होने 'बाम्बो रिव्हॉयव्हलस्ट स्कूल" की विचार धारा उजागर किया। भारतीय कला को प्रोत्साहीत किया, उसके लीये उन्होंने खास क्लास का निर्माण कीया। जी एच नगरकर उस क्लास के कुशल अध्यापक की नियुक्ती किये गए। नगरकर का प्रभाव छोड के अहिवाशी ने अपनी खुद की शैली प्रस्थापित की। इस शैली में भारतीय तथा आधुनिक कला मुल्यो का दर्शन होता है। अहिवसी ने भारतीय लघु चित्र तथा भित्तिचित्रों की प्रेरणा से अपनी शैली संपन्न की है। अहिवशी को मुरल डेकोरेशन क्लास शिष्यवृती १९२७ में मीली थी। इस म्यूरल क्लास की छात्र-छात्रोने जेजे स्कूल की इमारतो की दिवार, आर्च्स एवं खिडकीयों पर सुंदर म्यूरल बनाये है। वह बहुत सुन्दर तथा एतिहासिक तथोंसे भरपूर है। इन छात्र छात्राओंके नाम तथा उसके बारेमे बहुत कम जानकारी मिलती है।

यह सभी भित्तिचित्र विभिन्न विषयो पर आधरीत है तथा वह निर्मिती काल 1930 से 1950 के बीच मन जाता है।यहाँ निर्मिती काल भी अनुमानित है। इस का भी ठीक से डॉक्यूमेन्टेशन नही हुवा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। अहीवसी और नगरकर को अंजीठा, एलोरा, घारापूरी बाघ, बादामी, सितनवत्सल्य यहां की भित्तीचित्रों के पुर्ननिर्माण कार्य के लिए आमंत्रित किया गया था। इन अनुभव का जेजे की छात्रो को बड़ा लाभ मिला है। उनकी कला कौशल्य और प्रतिभा जेजे की ईमारत के म्यूरल पर स्पष्ट रूप में दिखाइ देती है।

नगरकर का पूरानाम गूणवंत हनुमंत नगरकर है। पूर्ण जीवनवादी शैली तथा विचार धारा में कलाकार्य करणे वाले प्रथम कलाकार छात्रों में नगरकर इनका नाम लिया जाता है। नगरकर ने म्यूरल क्लास की सुरुवात की। इस क्लास के पहिली बैच ने "कला देव्या: प्रतिष्ठा" इस म्युरल्य का निर्माण किया है। यह म्यूरल 16.09 X 33.8 फीट इस विशाल आकार मे बनाया गया है। इस ब्याच मे नगरकर भी थे। तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड लॉइड के करकमलों द्वारा उद्घाटन हुवा था। यह म्यूरल क्लास के लीए सन्मान की बात थी।

जेजे स्कूल की दीवारोपर स्थीत सभी म्यूरल पुर्णजीवन शैली (बॉम्बे रिव्हावल शैली) के मुख्य विचारधारा से प्रेरित है। उसमे हिन्दूधर्म, वर्णव्यवस्था, तत्कालीन समाजव्यवस्था और व्यवसाय इस जैस विषययावर रचना की गई है।

कैप्टन सोलोमन लिखित "म्यूरल पेंटिंग ऑफ़ द बॉम्बे स्कूल" इस किताब मै कई म्यूरल पर टिप्पणी की है यह किताब द टाइम्स ऑफ़ इंडिया की प्रेस मै छापी है। वह १९३० मे प्रकाशित की थी यह किताब बॉम्बे स्कूल के रिवाइवल मूवमेंट की एतिहासिक पार्श्वभूमि हेतु महत्वपूर्ण है इस मूवमेंट के मुखिया स्वयं सोलोमन ने इसे लिखे होने के कारन इस किताब की विश्वासनीयता पर शक नहीं किया जाता।

इस अध्यन ने मूख्य तौर पर भारत वर्ष "कला देव्या:प्रतिष्ठा" जिक्र किया जाना चाहिये विषय, आशय तथा आकार के हेतु भी वह अपना पक्ष मजबूती से रखता है। भारतीय कला संस्कृती धर्म सौंदर्य के प्रति आस्था इस विषय से अग्राहित होती है। इतिहास के कुछ क्षणों का साक्षीदार भी यह चित्र है भारत और भारतीय कला संस्कृती के प्रति अंग्रेजो ने दिखायी आस्था के कारन सोलोमन के प्रति और भी आदर बढ़ जाता है।

१९५० के बाद भारतीय कला पर अधिनिकता के सपने हावी होने लगे प्रगती की कल्पना आधुनिकता मे दिखने लगी और रिवाइवल मूवमेंट पीछे छुट गई।

भारतीय कलाकार छात्रों मे एक विचार ऐसा भी था की, अंग्रेज हमें नए विचारो के करीब नहीं आने देते। क्योकि उन्हें लगता है की हम उनपर कौशल और कारागिरी हेतु हावी हो जायेंगे, पर वैसा न था। सोलोमन की मनीषा पर नाहक शक किया, कोसा गया। लेकीन समय के चलते आधुनिकता के साथ रहना इसमे भी समझदारी थी। समय के साथसाथ भारतीय कला (रिव्हायव्हल शैली का) विलय हो गया। यह हमें स्वीकारना होगा।

जेजे स्कूल की दिवारों पर अनेक भित्तीचित्रों का निर्माण किया गया है। इसका माध्यम जलरंग एवं कुछ जगह पर टेराकोटा से बने है। भारतवर्ष यह भित्तिचित्र दीवार पर कैनवास चिपकाकर उसपर चितारा गया है। इन म्यूरल पर सभी भारतीय समाज, उत्सव, बाजार, संस्कृति, विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है। भारतीय पुनरउत्तान (रिव्हायव्हल शैली) इन चित्रों की मूल शैली है। यह बात फिरसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। इन चित्रों के सौन्दर्य मुल्यांकन के लीए भारतीय कला विचार एवम सौन्दय दृष्टी होनी आवश्यक है, अन्यथा इन म्यूरल्य के सौन्दर्य अनुभूति होने की संभावना नही है।

भारतीय कला मे रेषा अपना विशेष महत्व रखती है। इन भित्तिचित्रों की भी शक्ति इन रेखाओ मे आबंटित है। चित्रों का सौंदर्य आबाद होता है।अधिक तर यह चित्र दरवाजे के उपर की आर्च और खिडकियों की आर्च पर बने हुवे है। जेजे यह वास्तू इंडो गोथिक शैली से बनी है। इनकी खिडकीया बड़े आकार के दरवाजे वास्तु की सुन्दरता को भव्यता प्रदान करती है, जो की उसकी सुंदरता की एहम हिस्सा है।

जेजे स्कूल ऑफ़ आर्ट की इन म्यूरल ने अपनी अलग पहचान बनाई है। यह भित्तिचित्र बॉम्बे स्कूल के इतीहास को संजोड़ के रखती है। इसमें भारतीय कला तथा सौंदर्य की परिभाषा अंकित की गई है। रिवाइवल विचार धारा के अहम हिस्सों के साक्षीदार है। कला आदि घटक तत्वों के साथसाथ यह आधुनिक भित्तिचित्र कला इतिहास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

वास्तुओ हमारे यहाँ कला की माता कहा गया हैं। यह पैमाना नहीं है की वह वास्तु कितने क्षेत्रमे और तकनीक से बनी है। मंदिरों के गर्भगृह छोटे होते है, वहा अँधेरा रहता है। लेकिन वहा इश्वर का निवास भी तो होता है। वैसे ही जेजे वास्तु मे बने हुये यह भित्ति चित्र पवित्र अत्मावो की तरह ईश्वर का रूप है।

1. जेजे स्कूल ऑफ़ आर्ट की दीवार पर कला दिव्या: प्रतिष्ठा

२. जेजे स्कूल के दरवाजे की आर्च पर किये गए म्यूरल

३. जेजे स्कूल के दरवाजे की आर्च पर किये गए म्यूरल

संदर्भ:

1(कैप्टन सोलोमन, म्यूरल पैंटिंग ऑफ़ द बॉम्बे स्कूल, द टाइमस ऑफ इंडिया प्रेस, मुंबाई 1930

२) शिल्पकार चरित्रकोश, संपा. सुहास बहुळकर, दिपक घारे , साप्ताहीक विवेक (हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था) मुंबई: 2013

www.ignited.in

3(मुधुमंगेश कर्णाक (संपादन)सांस्कृतिक महाराष्ट्र (1960 ते 2010) महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि सांस्कृतिक मंडळ, मुंबई 2011

4(विनोद भारद्वाज (संपा) कलाए आस पास, ललित कला अकादमी नई दिल्ली, 2005

5(सिग्मन फाईड (अनुवाद प्र.ना.परांतपे) लि ओनार्दो विंची महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, मुंबई 1980

6(दिपक घारे (संपादक) कला मंदीरातील चाळीस वर्षे मॅजेस्टिक पब्लीकेशन हाऊस गिरगाव मुंबई प्रथम आवृत्ती 1940 द्विलोभ आवृत्ती 2018

7(सुहास बहूळकर प्रफुल्ला डहानुकर मास्टर स्ट्रो जहांगीर आर्ट गॅलरी, मुंबई 2010

Corresponding Author

विजय गोपाल सकपाल*

शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, (राज.)